5 ?kk?k HkM~Mjh

1. उत्तर चमके बीजुरी, पूरब बहती बाउ।
घाघ कहै सुन भड्डरी, बरधा भीतर लाउ।।

(जब उत्तर की दिशा में बिजली चमकती हो और पूरब की वायु बहती हो, तो घाघ कहते हैं कि हे भड्डरी ! सुनो, बैलों को घर के अन्दर ले आ, वर्षा अवश्य होगी।)

2. औआ बौआ बहै बतास।
तब होवे बरखा कै आस।।

(अगर वर्षा ऋतु में कभी इधर, कभी उधर, कभी तेज, कभी मंद, अनिश्चित हवाएँ चलने लगें, तो जानो कि पानी अवश्य बरसेगा।)

3. लाल पियर जब होय अकास।
तब नाहीं बरखा की आस।।

(आकाश लाल पीला होने लगें, तब वर्षा की आशा नहीं है।)

4. रात निबद्दर दिन को छाया।
कहैं घाघ अब बरखा गया।।

(जब रात्रि में बादल न हो और दिन में बादलों की छाया हो तो घाघ कहते हैं कि अब वर्षा चली गयी।)

5. उल्टे गिरगिट ऊँचे चढ़े।
बरखा होई भूइँ जल बढ़े।

(जब गिरगिट उलटा होकर ऊपर की ओर चढ़े तो समझो कि वर्षा होगी और पृथ्वी पर जल बढ़ेगा।)

6. अगहन बरसे हून, पूस बरसे दून।
माघ बरसे सवाई, फागुन बरसे मूर गँवाई।।

(यदि अगहन में वर्षा हो तो फसल अच्छी होती है और पूस में वर्षा हो तो दूनी फसल होगी और माघ में वर्षा होने से सवाई पैदावार होती है। परन्तु वर्षा यदि फागुन के महीने में होती है तो बीज भी नहीं मिलता।)

–घाघ

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED ©